24.5.20

सप्रसंग व्याख्या करू (मैथिली) part-II (प्रबंध)

प्र: समता अर्थक कतए सँ कएता आनकुरक कियार ?
किन्तु विदेह वैह कहैछ छथि, मारिक आकि कियार ।।

उत्तर: प्रस्तुत अवतरण प्रतिपदा क हलधर शीर्षक कविता सँ उद्धृत कयल गेल अछि। एहि अवतरण मे सामाजिक प्रगतिवादी भावना स्पष्ट रूप सँ परिलक्षित होइत अछि। कविक समक्ष तीन गोट हलधर छथि, एक द्वापरक हलधर दोसर त्रेताक हलधर आ तेसर युग-युग सँ चिर उपेक्षित हलधर अर्थात हरवाह लोकनि। द्वापर तथा त्रेताक हलधर भेलाह बलराम आ जनक। हरवाह लौकिक दयनीय दशा सँ ग्रसित अछि कवि हुनक समक्ष सम्बोधित करैत तुलनात्मक रूप सँ देखैत जनक आ बलराम अथवा लौकिक समकक्ष मे नहि आबि सकैत अछि। जनक ने हलधर भेलाह खेतक उपज जानकी के अपना घर आनि अपन घर के अलंकृत कयलनि। कविक व्यक्तिगत भावना छल जे जनकल्याण भावना सँ अभिप्रेरित भए कहीन काव्य-पाक भावना करैत छलाह। एहि पद्यक अवतरणक भाषा सरल एवं बोधगम्य अछि उपमालंकार विन्यासक संगहि प्रगति, भावना सन्निहित अछि, सुन्दर पद-योजना तँ कविक प्र... कहल जा... काव्य प्रतिभाक परिचायक

21.12.20 (संकलन) मैथिली (प्रतिष्ठा) द्वितीय पत्र

9 माय भाय राम आखर स्तुति कयली;

Ans :- एहि संकलन मे मातृभूमिक प्रेम के व्यक्त कएल गेल अछि, जे मनुष्यक अपन मातृभूमि सँ प्रेम नहि होइछ ओ मनुष्य जीवित कदापि नहि कहल जा सकैत अछि, मातृभाषा, मातृभूमिक मधुरिमा, मातृभूमि सन प्रेममय अन्य कोनो नहि मातृभाषा सनक मीठ आ आनन्ददायक भाषा कोनो भाषा नहि होइछ।

जे मनुष्य माताक अनादर करैत छथि माताक महत्व के बिसरि जाइत छथि, ओ मनुष्यक श्रेणी सँ नीचा भऽ रहैत पड़ैत छथि। पुत्र कुपुत्र होइत अछि, मुदा माता कखनो कुमाता नहि भऽ सकैत अछि। हमर ई मातृभूमि अनेकानेक पुत्र-रत्न के उत्पन्न कएने छथि, राम आ कृष्ण एहि धरती पर खेला कऽ किशोरावस्थाक परशुराम व्यास, वाल्मीकि, अगस्त्य प्राकृ कणादि जनक शंकराचार्य, महराणा अत्रि कपिल अभिमन्यु अनेकानेक विद्वान प्रताप, शिवाजी मातृभूमिक संतान छलाह आर गर्व करैत छथि माता। जिनका पर मातृभाषाक ऋणसँ हम नहि भऽ सकैत छी कहियो उऋण

५ प्र० [illegible] PAPER

९ - 'माता' शब्दक [illegible] जीवनकें [illegible] माधुर्य प्रदान करबाक [illegible], जे कोनो [illegible] शब्दमे निहित अछि, [illegible] शब्दमे [illegible] अद्भुत सम्बल, विचित्र माधुर्य तथा [illegible] प्रभाव उत्पन्न कs दैत अछि।

प्रस्तुत [illegible] अनुसार माता शब्द मातृभूमि [illegible] निबन्धक अंश सं लेल गेल अछि।

समस्त संसारमे माताक महत्ता सांसारिक समस्त संबंध सं सर्वाधिक उपर मानल जाइत अछि। माताक शब्द माधुर्य सं भरल एतेक हृदयग्राही प्रभाव दैत अछि से विलक्षण अछि। शब्द आ वात्सल्य भावक त्रिवेणी स्नान कर माता शब्द सुनतहि भावुक जन माताक स्नेह सं असीम आनन्द आ भक्ति भावना जागृत कs दैत अछि। वास्तव मे इ संसार छोड़ि एतेक बड़ अछि मुदा माता स्नेह अमृत-तुल्य अछि माताक आशीर्वाद पाबि कs व्यक्ति धन्य-धन्य भs जाइत अछि।

NOKIA

Scanned with CamScanner

निर्देश मे हमर बालक-बच्चाक
अपन मातृभूमि आ मातृभाषाक प्रति
सिनेहक जागी, हमरा सबकेँ मातृभूमि
सेवा मे अपन तन-मन धन समर्पित
कऽ मानवीय गुणक विकसित करबाक
~~एकरे~~ कृषि, वाणिज्य, दक्षताक सम्प्रति
विद्याक प्रकाश हमरा जन-जन तक
फैलाक एकताक वृद्धि करब आध्यात्मिक
कऽ आत्मिक प्रकाश फैलाक मातृभूमि
यथार्थ सेवा कऽ अपन
परिचय दऽ देशक मनुष्यताक
ई मनुष्यक वास्तविक गुण थिक
माखन लाल चतुर्वेदी एहि पंक्ति मे
राष्ट्रप्रेमक देलनि —

मुझे तोड़ लेना वनमाली
उस पथ मे देना तुम फेंक
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने
जिस पथ जाएँ वीर अनेक